

116 14i,
Saisi k g r t a
Hoi na

लाङ्गस्य पूर्विकं नृणां ॥ वशा वला ॥ ॥ ॐ ज्ञा वद वयसा
ला ॥ वनी ॥ ॥ ॐ वद ला कि न हि साहा ॥ दिवा ॥ ॥ ॐ वद वास
सहा ॥ कजम ॥ ॥ ॐ वद वि य रु मा य साहा ॥ वि य गु ॥ ॥ ॐ
सर्वे ला ग य ग म ना य साहा ॥ अ म वि ॥ ॥ ॐ वद व र्त्त न क वा य
साहा ॥ क क म ॥ ॥ ॐ सर्व व र्त्ता क वा य साहा ॥ ग न य य ॥ ॥ ॐ
वद वा डो य साहा ॥ सु म क ॥ ॥ ॐ क मि र्त्त नि ॥ दी पूर्विकं नृणां

हा ॥ व क मि व ॥ ॥ ॐ सर्व क र्म्म क वा य साहा ॥ व य क स व ॥ ॥
ॐ वद स द य र्द्द साहा ॥ व य क ग व ॥ ॥ ॐ समय ज्ञा व य साहा
॥ ज गु व ॥ ॥ ॐ पूर्विकं नृणां ॥ गु गु व ॥ ॥ ॐ द द र सा
हा ॥ सि व वा स ॥ ॥ ॐ क नृ र्त्त सर्व का य सि द म द वा य साहा ॥ न
क र्त्त न ॥ ॥ ॐ वद वि ष्णु का वा य साहा ॥ व र्त्त क वा न
॥ ॥ ॐ ज्ञा ४ र्द्द साहा ॥ ल व मू ला दि ॥ ॥ ॐ वद य य साहा ॥

इवोक्तं ॥ ॥ समस्तं धनं नात्र ॥ यत्कियाय ॥ अत्र वाचः यत्क
सुतकाः उमिमादिः स्नानमालासदिगैरुयाउ ॥ ॥ महावाक्क
यादि ॥ ॥ जनननुविगा वद्रीः स्नानवद्विप्रुद्योक्तयसाश्वना
दिदिननुद्याः तुद्यायामिकयुतु ॥ वद्वनह्यश्वरसुद्यावाडितव
युमि ॥ वद्वशुक्तमहश्वरः विद्ववायमाहवव ॥ कामदवेरुवि
वेवः चतुर्थदिनसुध ॥ विधि विद्याधलाश्वेव ॥ यत्कलं कवेय

सुध ॥ यत्कवाडाश्वनागमश्वः गधवासुलकिन्नत्रा ॥ नाययमिमेव
ः सहिदवात्तिगिन ॥ अकनिद्वानिवासिन ॥ महावाडादिनायश्व
निवा निवसवहवगिन ॥ निद्वश्वरमिदवाश्वः शुभवा ॥ गध
गम ॥ वेव ॥ मालचिलाकधनुश्वः चसधनु निवासनाः चतुदि
यस्किनासत्वाः सिनायचविधनुक ॥ लाऊनसत्वा लाकाश्वः ल
गातुमेनु ॥ गधयो ॥ मूदिनातुमिहिनायचः विमवायाचमनि

स्तिना॥ सावत्रायाकनासः धर्मभयान्गमयच॥ इकुथाथागन
शर्यः द्रवगमाश्चयाकाश्च॥ यलाकविनिवासिनः जहिमखि
स्तिनासत्वासाधमनिमगायचः दशकुमिश्रवनाथं॥ यागय
गत्रायचः संवद्वष्टवकाश्चैव॥ खड्गवकासत्रयिनः पुनन
वकनजश्च॥ दवास्त्रनरुकाः दीनिगाहामविश्रानन॥

नगसभयउरुमलुर्ल॥ ॥ दानवभयादि॥ ॥ यल
कयालयनाजहमिविय॥ दसनात्राजायनाः जहमिविय॥
गुत्रयडा॥ ॥ मलुलविलः गुत्रमलुलदानक॥ गिद्यावि
वासन॥ कनान॥ ॥ गिद्याद्रुमिविय॥ ॥ दक्षिण॥ सलम
नगया॥ कलभरिषक॥ जगिर्दोदविय॥ ॥ गिर्दोदक
यहविवि॥ ४॥ ४॥ लिखितं वजावायः वममूनिनः ४॥

हं लभ्याविधिना आवि नाय कं सर्वसिद्धि मरु द वः ग लभय नम
नमो॥ कृष्ण लपलम द व मय ला पलिसंस्ति गाः नित्य दूमा
लत्र पायः कृष्ण लं प लमामि दं॥ दम्भा क ला नाय या द व म
नियमनः द सकारं महा ला उ मा का ल लमामि दं॥ ॥ ॥
(पूर्व॥) सुधा पात्र धर्म वज्र अक्रु सुग द विन्दु कः वृष्ण न्या वा द य द
विः धान दूष्य नम म्॥ उं ह्रीं सिंदूर प्रयाग स्य वि द्या सा य हं

दृष्ट्वा हा॥ ॥ वृक्षयनि वृक्ष ला कं अवत ल अवता लसि च
दृष्ट्वा हा॥ धान॥ वृक्षयनिः पितृ वृक्ष न क म्खा द स वा द
नि चक्रु हं जाम्बल हं जाल्याः विन्दु पात्र चः अवत जाल्या अक्रु हं
क विन्दु म् सुत्र ध ल॥ ॥ दूष्य न्या॥ रुद्र॥ वृक्षयनि नम स्वा हा॥ उं
वृक्षयनि नम स्वा हा॥ वज्र चक्र नम स्वा हा॥ निलडि x ॥ यव पाल
पूजा॥ ॥ मृगि॥ वृक्षयनि पूर्वपिगा ला अका लविउ स ह वा स्वा
यू धा तु विन्दु पात्र च नम म् हं स वा द नि॥ वलि॥ अका लविउ

सज्जन पूर्व व्रजयनि उदैवदाऽममसंयलि बालस्यः श्रमि दुः
लपष्टि दुः ॐ दवलि खरुवादि २ ॐ मि व्रजयनिय स्वाहा ॥
॥ उदैलस ॥ ॥ महा ये न व पा ल वः गत्य ल ७ उ व
लादिदिमः आ न्या वा द दवि धन पृथ नमस्तु ग ॥ ॥ उंदिहिदि
ह को लागीविद्य नासाय हं २ रु द स्वाहा ॥ ॥ आ दायनि आ नु ३ यः
अवगल अवगलसि च हं रु द स्वाहा ॥ धन ॥ मा ह स्वलिः स्वर्न व न्म
देख वा हनि च रु ह अ मूल रु ज त्या व उ व ल द मि दु स ल ॥ पृ ३ः

न्यासा ॥ रु रु ३ आ दायनि नमस्वाहा ॥ दि व लुपि नमस्वा हा ॥ ३ रु सकि
नमस्वा हा ॥ ॥ निलडि ४ ॥ प व पा हा ल पृजा ॥ मि ॥ आ दायनि ६
ह ना स ग क का ल वि उ स रु बा स्वाय ध रु वि रु पा ग वः नम ग रु ख वा
हनि ॥ वलि स ॥ ॐ आ रु रु क का ल वि उ स ज्ञा नः उ र्न ला मा रु स्वलिः
स्वर्न ज्ञा ग वः ३ वि व स र्व ध ग ना श्रमि दु ल स्वस्ति स्वाहा ॥ ॥
॥ ॥ अ न न सा ॥ पि रु क सकि रु न व वः ३ य मि उ पु मा ली न का

मा ल्या वा रु द वि ध्य न पृथ न म मृ ग ॥ ॥ उं हि ण्द्रं रु अ म हा स
न वि द्य ना सा य द्दं रु द्वा हा ॥ चः का मा लि उ मा ल पा र्कं अ व र्ण ल अ
व ग ल सि धं रु द्वा हा ॥ ॥ ध्य ना ॥ का मा लि न कु व ल म य लः
वा रु नि च रु त म ल रु डा ल्या वि न्द्र पा त च अ प ल रु डा ल्या ण कि का
रु कं ॥ पृ क्त्वा सा ॥ रु रु का मा लि य न म स्वा हा ॥ ल क च रु न म स्वा
हा ॥ व उ व रु न म स्वा हा ॥ नि ल डि म् x ॥ प च प चा ल प डा ॥ उ ति ॥

का मा लि व द्म ल का ला च का ल वि उ स रु बा ल्या ध रु वि न्द्र पा त च
न म म्म म य ल वा रु नि ॥ व लि ॥ अ ज य का मा लि द्दं रु द्म म स र्व
स रु ना णा स य र मा ल य र वं य य र म य ला स नि द वि ध नि य ल्यः
॥ रु व लि रु द्म रु द्दं रु द्वा हा ॥ ॥ ॥ वे ल थ सा ग ल रु ज च
धि रु वि न्द्र प म या गा गा स ता रु य त् वे ल्वा वा रु य द वि ध्य न
पृथ न म मृ म् ॥ उं हि ण्द्रं रु अ य नि वि द्य ना सा य द्दं रु द्वा हा ॥
वे ल्वा वि वी न्द्र ला र्कं अ व र्ण ल अ व ग ल णा र्कं रु द्वा हा ॥ ध्य

ना॥ वैकुण्ठविद्यावत्ताग जासनी वडुह जासुल ह जात्या विरुपा
ग वज्रपल ह जात्या सख वक्र धालनि॥ पृथ न्यासा॥ रुद्र वैष्ण
विय नमस्वाहा॥ दिव्य लयि नमस्वाहा॥ विलचुड नमस्वाहा॥ निल
जिम्भ॥ पच पाहा लपुजा॥ भुगि॥ वैकुण्ठविद्याम नैश्याहाटकाल
विज सरवास्यायि अडुविद्याम वनमस्तुगल दासनि॥ वलिः
मेलही वैकुण्ठविगल दासनि पनि पथ सम सर्व शत्रु नागासः

यशः शौचं वैकुण्ठं रुद्रस्याहा॥ ॥ ॥ दक्षिणसा॥ पा
सां च स पलायी वनक क्व विरुद्र कः कालास्या वाह दविः
धनपृथ नमस्तु॥ उं हिं शौं हं ह कालागि विद्य नासाय हं
रुद्रस्याहा॥ गः वालाहि ह ग लाक अवगल अवगालनिं दौं
द्रुद्रस्याहा॥ धन॥ वालाहि नक वन्म नक मुखगि न्याग
वडुह जासुल ह जात्या विरुपा ल वज्रपल ह जात्या खड्ग

हरक धालनि॥ पृथ न्यासा॥ हरदू वालाहिय नमस्वाहा॥ ध्याः
लव नमस्वाहा॥ कोल लपिन नमस्वाहा॥ निलडि मूरुस कर्क
॥ पव पाहाल पूजा॥ मृगि॥ वालाहिया मल का हाट कालवि
उसरवा सायि धनु विन्दु पार्क च नमस्तु महि खासनि॥ वलिः
दखि वालाहि च न ध्या लालपिनिमी नावलू धालनि महि ख
सनिय दूंदू स्वाहा॥ ॥ ॥ पकिमसा॥ मारु पूगा क

कसुनं च विन्दु पाता संगार वळ दा न्या वाद यद वि धम न पृथ न
मस्तुसा॥ उं हिं शां दूंदू वाला नस्य वि धु ना साय दूंदू स्वाहा॥ प
४ न् आयनि न् दु ला कं अवर्क ल अवगा लं हि दं दूंदू स्वाहा
॥ धम ना॥ न् आयनि कूं वूम वक्ष ग डा सनि वरुह डा मूलरु डा
ह्यां व ड न् धालनि॥ पृथ न्यासा॥ हरदू न् आयनी नमस्वाहा॥

वि
धालवतु नमस्वाहा॥ विलम्ब नमस्वाहा॥ ॐ हसकि नमस्वाहा॥ निः
लडिमूर्तसः॥ वचपादापुजा॥ ॐ ह्ययनिपुर्लपिगाला यकालविः
उसंर वास्वायि धातुविदुपागवनमस्तु उवाहनि॥ वलिता॥ ॐः
आर्द्रं अस्तु समस्त न्यलि ला वउसदिगाय पद्धि म ॐ ह्ययनिपुर्ल
स्वाहा॥ ॥ वायुयसा॥ वायुयसमकर्त्तव्य वउदुः
न के विदुर्क वाम्बु वाहदवि धनपुष्य नमस्तु॥ ॐ हिसि

रुदवि कार्त्त कवि पुनासायदुर्दुस्वाहा॥ यवाम्बु ककालुपिअ
वगल अवेता लंसी प्यं दुर्दुस्वाहा॥ धन॥ वाम्बु लक वनाक
स्वागि यतासनिविलम्ब ध के सनि चउर उासु लर उाया विदुपागः
वअयलर उाया कर्त्त कवा लमूर्त वा॥ पृथ न्यासा॥ रुदु वासुः
ह्यय नमस्वाहा॥ दुं क्रावतु नमस्वाहा॥ कालि कायु नमस्वाहा॥ नि
लडिमूर्तः॥ यः॥ वाम्बु दालक वायियो वाय कालवि उसंर वास्वा
यि धातुविदुपागवनमस्तु यरु सनि॥ वलिता॥ वायुय वाम्बु

वसिष्ठमिष्टं लैसधलथस्य दयाय स्वमिवापहकद्रवके नानि
यकं यच्छायाधिव युयुमत्तुल्लक्षनके पार्थनायायके ॥ मिष्टपनि
मनःकाय दयाय अयनि पादियुदन जायके असेनयमाय
धके युयुयके के मानके ॥ विमर्कस यायके ॥ ॥ यदुधायानः
पिबत पर्यसाय निहातान इत्यल्लदयके साकुलिमिवाय
यके मासकेयके डमदयश्मर्हणयमर्हयसादो धीरदीनय

नवकुमिहाथयूजा लुपिपन

सादा॥ ॥ अलिनि रू म म त य ॥ सर्ववृद्धा मलिव आषी प व
धमि वृ २ ह सा दा ॥ ॥ हा सा तु रि न ग म ल ॥ डं म दा म म य म ॥
न सा प्र य सा दा ॥ ॥ बाल प्र व द्वा य ॥ मा म न आ न कै त य ॥ वा न
म लेख दू द्वा य कै ॥ क ना दा न वि य ॥ वा क ॥ म दा वा क ॥ डं ॥
वृ य ता था ग मि म डा ॥ क्का ना ला क य ता क लि ॥ गृ ही ला पा लि नौ पा दी
पा लि वृ द्वा य क रि ता ॥ ॥ स्त्री ला ह व x ॥ कृ स्त ल पि या ग न य

य ॥ ॥ म गारु ॥ गाल या ॥ अलिनी ॥ दा सा ॥ र दि स ला य ॥ ग रू न ता
य ॥ य रू म उ य ॥ दू य कै ॥ क न य मि ॥ ल लि क म ॥ त य ॥ वा यु व नी सा
वा यु व म ॥ वा सा य कै ॥ ल य ॥ वृ दी ण न म ॥ द क्री न मा ठ क ॥ अ ला म
प रि म सा य कै ॥ नै य ल म ॥ ड रू ल सा ठ क ॥ नै य ल न ध न ॥
क न य मि ॥ ल लि क म ॥ वृ दी मा ता ॥ त या व ॥ अ लि नी न ॥ वा य रू
॥ म गारु ॥ गाल या ॥ म य न ॥ दा सा ॥ तु रि न ग म ल ॥ ग रू न य ॥

कून पाँते धन॥ ॥ धव धव धा य सै ग य यरु स य व क द य
आरु गिया य ॥ डं क म का न य ला दा ॥ ॥ स ला पा ग द न स ग य
या य स थिय क रि या ग रु द य स ग द थिय व रु द्रा य स ग द न
ग य क व न्दा व न क य ॥ स दा व लि वी य ॥ प र्दु या यो ल द द य
प र्दु द्रु गिया य व रु म दा य ग य ता द ण य ता य ग य ता य
द्रु गि विय क गान क णि पा द्रु गिया य ॥ ॥ सु य य ॥

द की दा स गान क ल ण रि थ क आ सि र्वा द धा न व लि द्रा य ॥
स गि क द्रु व न्ता य य ग ॥ व न्ता य यी ग य ॥ ॥ ध ग व दिय
य वि धि ॥ ॥ ॥ य र्दु ग य द्रा य ॥ डं अ मा य प दि
व धि रि द्रु द स ल स दा य द र्द ॥ व र्जि री र्द र्द ला दा ॥
डं गं जी अ ॥ ॥ य र्दु ग य विय ॥ डं व र्जि री र्द र्द सी र्द
ध न ला दा ॥ ॥

विद्युय वाधिरुद्रयामनरुनचिन्मय॥ विद्रुचसमयदवनाह
नदवनयकीरुगाचिन्मय॥ ॐ सर्वेनथागनमहायागीश्वजीहं॥
धाम॥ ॐ वज्रयकहं॥ धाम॥ ॥ आकर्मन॥ ॐ रं ३ रं॥ ॐ वज्रा
कगवीरुमाकर्मयक॥ ॐ वज्रयागीवीरुवधयहं॥ ॐ वज्रकाटवीरु
वगयव॥ ॐ वज्रावगीवीरुसनामयहं॥ धाम॥ ॐ रगव॥ ॥ नि
लाङ्गन॥ ॐ अकावमूरुस॥ ॐ जी॥ ॥ अचमनंयुक्ति॥ ॥ लाह॥ वसि

नयिय॥ ॥ ॐ अ॥ ॥ वज्रयक सर्वेयायविद्युमावान्तरसिं क॥ ॥ रं
॥ नकायकादय॥ ॥ ॐ अ॥ ॥ वज्रकर्म सर्वेक॥ ॥ धाम॥ ॥ धाम॥ ॥
॥ धाम॥ ॥ ॐ अ॥ ॥ वज्रयक सर्वेयायविद्युमावान्तरसिं क॥ ॥ रं
॥ नकायकादय॥ ॥ ॐ अ॥ ॥ वज्रकर्म सर्वेक॥ ॥ धाम॥ ॥ धाम॥ ॥
॥ धाम॥ ॥ ॐ अ॥ ॥ वज्रयक सर्वेयायविद्युमावान्तरसिं क॥ ॥ रं
॥ नकायकादय॥ ॥ ॐ अ॥ ॥ वज्रकर्म सर्वेक॥ ॥ धाम॥ ॥ धाम॥ ॥
॥ धाम॥ ॥ ॐ अ॥ ॥ वज्रयक सर्वेयायविद्युमावान्तरसिं क॥ ॥ रं
॥ नकायकादय॥ ॥ ॐ अ॥ ॥ वज्रकर्म सर्वेक॥ ॥ धाम॥ ॥ धाम॥ ॥
॥ धाम॥ ॥ ॐ अ॥ ॥ वज्रयक सर्वेयायविद्युमावान्तरसिं क॥ ॥ रं
॥ नकायकादय॥ ॥ ॐ अ॥ ॥ वज्रकर्म सर्वेक॥ ॥ धाम॥ ॥ धाम॥ ॥

द्वयवदगवद्वयसंयुक्तसयनिसा ॥ ॥ दिवा ॥ उं रवरसर
वर ॥ उं दियवविष्णुधनरुंरुंरुंरुंरुंरुं ॥ ॥ निलाजना ॥
यलवायः मंशुलाकनाध ॥ ॥ ॥ यद्वयना ॥ उं कल्लगवद्व
रकावकायवादीज्यवर्तम ॥ उं वेवाचनायः त्यादि ॥ ॥ यंवावका
वपूजा ॥ ॥ मुनि ॥ सर्वथापिरवाग्रः सुगनाधिवनजिनः ॥ ॥
रुंरुंमहाडीः यंरुंरुंनमस्तु ॥ ॥ ॥ सगानवपूजा ॥ उं सव

गलरवावकायवादीज्यवर्तम ॥ उं जयवद्विनम ॥ उं यसाधर्मन
म ॥ उं सुपुत्रयनम ॥ उं वनवद्विनम ॥ उं जयवर्तनम ॥ उं सना
नवद्विनम ॥ ॥ यं ॥ ॥ जयवद्वियसावद्विः वद्वियसुसुखसुधा ॥ ॥
याग्यधनवाएरुः सननसकमसुधा ॥ ॥ ॥ वेखाननवपूजा ॥ ॥
वेखाननलरकावकायवादीज्यवर्तम ॥ वेखाननलायसाहा ॥ मानिर
डायसाहा ॥ ॥ ॥ रडायसाहा ॥ ॥ वनज्यायसाहा ॥ वेखवधायसा

हा॥ वंथा वचा वय जा॥ सुगी॥ नंद सं वाड निऊगी॥ वेष्मने लसदा
हर्ल ॥ माहाधुत ना वल्यः सुवे सं वलि दायकं॥ ॥ ग॥ स॥ स॥ व
जा॥ विष्णुधर रका वकाय वा दो जय नमः॥ ॐ गं ग स प ग सा हा
॥ ॐ ग ल धि व ग सा हा॥ ॐ ग ल धि वा य सा हा॥ ॐ ग स प नि य कि
गा य सा हा॥ ॐ वि धु स वा य सा हा॥ वंथा वचा लय जा॥ सुगु॥ रु व म
य व म नंद वः कार्य सिद्धि विनायका ॥ सो रा ग्य व य स य मः द हि म

हि सुख संयद ॥ ॥ महाका वय जा॥ ॐ क गु वाल र द व का य
वा दो जय नमः॥ ॐ मं महाका वय सा हा॥ ॐ महाका वी य सा हा॥ ॐ
क ला वा य सा हा॥ ॐ य ली थ सा हा॥ ॐ व ना वा य सा हा॥ वंथा व
चा लय जा॥ सुगु॥ महाका वं क व व लः व द ग स न व क कं ॥ क हि
क वा ल व र वी लः महाका लं न मा म्य र्द॥ ॥ ग॥ ग॥ स॥ वय जा॥ ॐ
ग म म ग र का व का य वा दो जय नमः॥ ॐ न न्दा य सा हा॥ ॐ र दाय

यथाहा॥ महावकीयेसाहा॥ वसुधायैसाहा॥ वंः सु॥ नमस्तुभ्यं
हादविः सर्वसत्ताथदायनि॥ नमस्तुभ्यं दिव्यवृषीयः वसुधायै नमः
स्तुभ्यं॥ ॥ यक्षयक्षणीयजा॥ वज्रयक्षमहावीराः हसिताकाध
नाननाः यक्षणीसहसालिग्यः ब्रह्मरयमहवरा॥ वज्रयक्षा यथा
दो ज्येष्ठनमः॥ ॐ वज्रयक्षा यनमः॥ यक्षणीयनमः॥ महावज्राय न
मः॥ वज्रहस्ताय नमः॥ महायहाय नमः॥ वीराय नमः॥ वंः सु॥

वज्रयक्षमहागजाः यक्षणीयानि वासनीः सर्वमन्त्राधनं ॥
नः वज्रयक्षीनेमास्तुभ्यं॥ ॥ नामवापजा॥ वंजातवन्तं शुद्धं
ः सकरनालीकरी ज्वरयासति सद्यनः वासनागमनिधुता॥ ॥
नमस्तुभ्यं गसुद्धः पूषाकालिनमः॥ वज्रस्य यथादो ज्येष्ठनमः
॥ वज्रस्य साहा॥ जननाय साहा॥ यथाय साहा॥ गङ्गाकाय सा
हा॥ वासुधिकाय साहा॥ ॥ ॐ यथा लाय साहा॥ कर्कोठकाय साहा॥